मासिक समाचार पत्र

परिसर

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,मेरठ

जनवरी–फरवरी 2026

अटल सभागार में उत्तर प्रदेश दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में रासलीला का मंचन करता सीसीएसयू का विद्यार्थी। → (खबर पेज 2 पर)

इंजीनियरिंग और फिजिकल साइंसेज में विश्व रैंकिंग में आया सीसीएसयू

टाइम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026 में विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग व फिजिकल साइंसेज के शोध गुणवत्ता व उद्योग सहभागिता में दिखा सुधार

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय (सीसीएसयू) ने अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक मंच पर एक नई उपलब्धि दर्ज की है। टाइम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026 में विश्वविद्यालय ने इंजीनियरिंग और फिजिकल एजुकेशन विषय क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए वैश्विक स्तर पर अपनी अकादमिक पहचान को और मजबूत किया है। हाल ही में जारी इस रैंकिंग में विश्व के 100 से अधिक देशों के विश्वविद्यालयों का व्यापक मूल्यांकन किया गया।

रैंकिंग के अनुसार, इंजीनियरिंग विषय क्षेत्र में सीसीएसयू को 801–1000 रैंक बैंड में स्थान मिला है। इस श्रेणी में विश्वविद्यालय ने रिसर्च क्वालिटी में 72.1 अंक, इंडस्ट्री इंगेजमेंट में 21.9 अंक और इंटरनेशनल आउटलुक में 34.3 अंक अर्जित किए हैं। वहीं फिजिकल एजुकेशन विषय क्षेत्र में सीसीएसयू को 1001–1250 रैंक बैंड में स्थान मिला है। इसमें रिसर्च क्वालिटी में 47.6 अंक, इंडस्ट्री इंगेजमेंट में 19.3 अंक और टीचिंग यानी शिक्षण में 21.8 अंक मिले हैं। विश्वविद्यालय ने इन विषय क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश के सभी अनुदानित राज्य विश्वविद्यालयों में सर्वोच्च रैंक बैंड प्राप्त किया है।

विश्वविद्यालय के निदेशक (शोध व विकास) प्रोफेसर बीरपाल सिंह ने बताया कि इंजीनियरिंग विषय में 72.1 का रिसर्च क्वालिटी स्कोर विश्वविद्यालय के शोध प्रकाशनों की गुणवत्ता और अंतरराष्ट्रीय उद्धरण प्रभाव में बढ़ोतरी को दर्शाता है। फिजिकल साइंसेज में 47.6 का रिसर्च क्वालिटी स्कोर और 19.3 का इंडस्ट्री इंगेजमेंट स्कोर यह दर्शाता है कि सीसीएसयू का शोध अब समाज और उद्योग की आवश्यकताओं से अधिक प्रभावी रूप से जुड़ रहा है। वहीं इंजीनियरिंग क्षेत्र में 21.9 का इंडस्ट्री इंगेजमेंट स्कोर और 34.3 का इंटरनेशनल आउटलुक स्कोर विश्वविद्यालय की वैश्विक भागीदारी और उद्योग–सहयोग की मजबूती को दर्शाता है।

टाइम्स हायर एजुकेशन की ओर से विश्वविद्यालयों का मूल्यांकन, रिसर्च, एनवायरनमेंट, रिसर्च क्वालिटी, इंडस्ट्री इनकम और इंटरनेशनल आउटलुक जैसे प्रमुख मानकों पर करती है।

इस अंतरराष्ट्रीय उपलब्धि से विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय और वैश्विक शैक्षणिक प्रतिष्ठा को नई मजबूती मिलेगी। छात्रों को विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ अकादमिक सहयोग, एक्सचेंज प्रोग्राम और उच्च शिक्षा के बेहतर अवसर प्राप्त होंगे। शोधकर्ताओं को वैश्विक फंडिंग एजेंसियों, उद्योग जगत और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों से सहयोग के नए अवसर मिलेंगे।

साथ ही विश्वविद्यालय में नई शोध परियोजनाओं, आधुनिक प्रयोगशालाओं और नवाचार आधारित अकादमिक संस्कृति को गति मिलेगी।

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला का कहना है कि ये आंकड़े स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि बीते वर्षों में विश्वविद्यालय के रिसर्च इंडेक्स, उद्योग सहयोग और अंतरराष्ट्रीय सहभागिता में उल्लेखनीय मजबूती आई है। सीसीएसयू की यह उपलब्धि केवल रैंकिंग नहीं, बल्कि शैक्षणिक परिवेश में आए सकारात्मक परिवर्तन और निरंतर सुधार की पहचान है। कुलपति ने इसका श्रेय सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों और कर्मचारियों को देते हुए कहा कि यह उपलब्धि हमें शिक्षा, शोध और नवाचार के क्षेत्र में और बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरित करेगी।

सीसीएसयू और मलेशिया की यूनिवर्सिटी में समझौता

मलेशिया यूनिवर्सिटी से समझौते के दौरान कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला और विदेशी विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि।

परिसर संवाददाता

मेरठ। सीसीएसयू मेरठ ने वैश्विक शिक्षा और अनुसंधान सहयोग की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए मलेशिया की प्रतिष्ठित सेगी यूनिवर्सिटी के साथ पांच वर्षीय अंतरराष्ट्रीय समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। यह समझौता गोवा में आयोजित क्यूएस समिट 2026 के दौरान हुआ। यह साझेदारी भारत–मलेशिया के बीच उच्च शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार और अकादमिक सहयोग को बढ़ाएगी।

इससे पहले सीसीएसयू को हाल में ही कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय के नेतृत्व में गूगल क्लाउड के सहयोग से भारत का पहला एआई इनेबल्ड स्टेट यूनिवर्सिटी पायलट संस्थान चुना गया है। एमओयू के दौरान सीसीएसयू की कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने कहा कि सेगी यूनिवर्सिटी के साथ यह अंतरराष्ट्रीय एमओयू सीसीएसयू के लिए गर्व का क्षण है। यह साझेदारी हमारे विद्यार्थियों और शिक्षकों को वैश्विक अवसरों से जोड़ने में मील का पत्थर सिद्ध होगी। सीसीएसयू के डायरेक्टर रिसर्च प्रो. बीरपाल सिंह ने बताया कि सेगी यूनिवर्सिटी का क्यूएस वर्ल्ड रैंकिंग में शीर्ष 1.5 प्रतिशत संस्थाओं में स्थान पाना इस साझेदारी को और अधिक मजबूत बनाता है।

सीसीएसयू को पहला एआइ राज्य विश्वविद्यालय बनाएगा गूगल

कौशल विकास मंत्रालय, गूगल क्लाउड और सीसीएसयू के बीच हुई साझेदारी

परिसर संवाददाता

मेरठ। कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय के राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री जयन्त चौधरी ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ) के माध्यम से शिक्षा और कौशल विकास के बीच की दूरी को समाप्त किया जा सकता है। उन्होंने नई दिल्ली में आयोजित एआइ फार लर्निंग फोरम में शिक्षा और कौशल प्रणाली में एआइ को शामिल करने को लेकर केंद्र सरकार के दृष्टिकोण को साझा किया। इस अवसर पर मंत्रालय, गूगल क्लाउड और चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के बीच एक महत्वपूर्ण साझेदारी की घोषणा की गई। इस पहल के तहत सीसीएसयू देश का पहला एआइ इनबिल्ट राज्य विश्वविद्यालय बनेगा। यह प्रधानमंत्री के विकसित भारत 2047 के तकनीक आधारित दृष्टिकोण को साकार करने की दिशा में बड़ा कदम माना जा रहा है।

जयन्त चौधरी ने कहा कि विकसित भारत का लक्ष्य हमारे जनसांख्यिकीय लाभांश को जनसांख्यिकीय गतिशीलता में बदलने पर निर्भर करता है। लंबे समय तक डिग्री और कौशल को अलग–अलग माना गया, लेकिन अब एआइ के जरिए दोनों को जोड़ने का अवसर मिला है। इस तरह की साझेदारियों से केवल तकनीक का उपयोग नहीं हो रहा, बल्कि

एक ऐसा रोजगार उन्मुख तंत्र तैयार किया जा रहा है, जिससे देश के हर हिस्से के युवाओं को उच्च गुणवत्ता वाले कौशल मिल सकेंगे।

गूगल इंडिया की कंट्री मैनेजर एवं उपाध्यक्ष प्रीति लोबाना ने कहा कि गूगल भारत को वैश्विक एआइ केंद्र बनाने के लक्ष्य के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध है। इस सहयोग से सीसीएसयू में व्यक्तिगत जरूरतों के अनुसार सीखने की व्यवस्था, एआइ आधारित करियर मार्गदर्शन और अन्य शैक्षणिक समाधान विकसित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि छात्र चाहे कहीं भी रहते हों, उन्हें विश्व स्तरीय शिक्षण औपचारिक कार्यक्रम से पहले जयन्त चौधरी ने सीसीएसयू के छात्रों और शिक्षकों से संवाद किया। इस दौरान इस बात पर चर्चा हुई कि एआइ किस प्रकार पढ़ाई को बेहतर बना सकता है, रोजगार के अवसर बढ़ा सकता है और टियर–2 व टियर–3 शहरों के युवाओं के लिए नए रास्ते खोल सकता है। गूगल की सरकारी मामलों की निदेशक योलिंड लोबो द्वारा संचालित संवाद सत्र में मंत्री ने शिक्षा और उद्योग की जरूरतों के बीच की खाई को पाटने की आवश्यकता पर जोर दिया।

इस पायलट प्रोजेक्ट के तहत सीसीएसयू एआइ–आधारित संस्थागत सुधार के लिए एक लिविंग लेबोरेटरी के तौर पर काम करेगा। विद्यार्थियों के लिए पर्सनलाइज्ड एआइ ट्यूटर, एआइ संचालित स्किल–गैप एनालिसिस और एडमिनिस्ट्रेटिव वर्कफ्लो को आसान बनाने के लिए इंटेलिजेंट डाक्यूमेंट प्रोसेसिंग करेगी। मंत्री ने बताया कि सीसीएसयू से जुड़े कालेजों को इस पायलट प्रोजेक्ट से तुरंत फायदा होगा और इससे मिली सीख को भारत के 45,000 से ज्यादा कालेजों और 1,200 से ज्यादा यूनिवर्सिटीज में लागू किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सीसीएसयू को सिर्फ एक यूनिवर्सिटी के तौर पर नहीं, बल्कि संस्थागत बदलाव के एक ब्लूप्रिंट के तौर पर देख रहे हैं ताकि मेरठ के विद्यार्थियों को भी वही एआइ क्षमताएं मिलें, जो ग्लोबल टेक्नोलाजी हब में छात्रों को मिलती हैं।

प्रेमचंद पर रिसर्च की जरूरतः : उर्दू विभाग में प्रेमचंद पर सेमिनार में डॉ. प्रदीप जैन ने कहा कि प्रेमचंद ने तीन सौ से अधिक कहानियां लिखीं, लेकिन चर्चा सिर्फ कुछ ही कहानियों पर होती है। प्रेमचंद पर गहन शोध की जरूरत है। प्रो. प्रज्ञा पाठक ने कहा कि मुंशी प्रेमचंद ऐसे कहानीकार हैं जिनका महत्व हर दौर में एक सा रहेगा।

प्रदेश को आत्मनिर्भर व समृद्ध बनाने में योगदान दें युवा

परिसर में उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने किया आह्वान

कार्यक्रम के दौरान मतदाता जागरूकता संबंधी शपथ लेतीं कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला और विश्वविदयालय के शिक्षक व विद्यार्थी।

कार्यक्रम में प्रस्तुति देने वाले कलाकारों के साथ कुलपति और अन्य शिक्षकगण।

परिसर संवाददाता

मेरठ। सीसीएसयू की साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद ने शनिवार को उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस मनाया। अध्यक्षीय संबोधन में कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने कहा कि उत्तर प्रदेश केवल एक राज्य नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, सभ्यता और लोकतांत्रिक मूल्यों की आत्मा है। प्रदेश ने देश को राजनीति, साहित्य, कला, विज्ञान, शिक्षा और स्वतंत्रता संग्राम के क्षेत्र में अनगिनत महानुरुष दिए हैं, जिनकी विरासत आज भी राष्ट्र को दिशा प्रदान कर रही है।

कहा कि प्रदेश की स्थापना से लेकर वर्तमान तक की यात्रा संघर्ष, संभावनाओं और निरंतर विकास की कहानी है। आज प्रदेश शिक्षा, स्वास्थ्य, आधारभूत संरचना, उद्योग, स्टार्टअप और तकनीक के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे प्रदेश की इस विकास यात्रा में सक्रिय भागीदार बनें और अपने ज्ञान, कौशल और नवाचार के माध्यम से उत्तर प्रदेश को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाने में योगदान दें।

कुलपति ने मतदाता दिवस के संदर्भ में युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि लोकतंत्र की मजबूती जागरूक मतदाता पर निर्भर करती है। प्रत्येक नागरिक, विशेषकर युजा वर्ग का यह दायित्व है कि वह अपने मताधिकार का प्रयोग निष्ठा, समझ और जिम्मेदारी के साथ करें। जागरूक मतदाता ही सशक्त लोकतंत्र की नींव है।

कार्यक्रम में तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल की ओर से उत्तर प्रदेश पर आधारित 10 मिनट का वृत्तचित्र प्रदर्शित किया गया, जिसमें प्रदेश के इतिहास, संस्कृति और विकास यात्रा को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया।

इसके बाद भाषण, पोस्टर, रंगोली व क्विज प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के छात्र–छात्राओं ने लोक नृत्य से कार्यक्रम में सांस्कृतिक रंग भर दिया।

बचेगा पर्यावरण, प्लास्टिक कचरा फैशन में भरेगा रंग

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय ने प्लास्टिक कचरे यानी पीईटी को उपयोगी रंगों में बदला

परिसर संवाददाता

मेरठ। पैकेजिंग सामग्री, सिंथेटिक वस्त्र एवं उपयोग के बाद बोतलों के रूप में निकला प्लास्टिक कचरा पर्यावरण के लिए सिरदर्द नहीं बनेगा। इस कचरे में मुख्यतः शुमार पॉलीएथिलीन टेरेफ्थेलेट (पीईटी) पर्यावरण को बचाते हुए फैशन में रंग भर सकेगा। स्वतंत्र रूप से वातावरण में बेहद धीमी गति से नष्ट होने वाले इस पीईटी को चौ. चरण सिंह विवि ने उपयोगी रंगों में बदल दिया है।

पीईटी से मिले ये रंग टेक्सटाइल इंडस्ट्री में फैशन के रंगों से मिलकर चमकेंगे। यह रंग वर्तमान में प्रयुक्त रंग (डाई) से न केवल सस्ते होंगे बल्कि लंबे समय तक टिकाऊ एवं पूरी तरह से हानिरहित होंगे। पीईटी को रंगों में बदलने की इस तकनीक का पेटेंट प्रकाशित हो चुका है। एल्सवेयर के जर्नल ऑफ एन्वॉयरमेंटल मैनेजमेंट में यह शोध प्रकाशित हुआ है।

सीसीएसयू कैंपस के रसायन विज्ञान के प्रोफेसर डॉ. राकेश कुमार सोनी के निर्देशन में सीनियर रिसर्च फैलो एवं पीएचडी शोधार्थी नेहा मित्तल ने यह शोध किया है। नेहा ने पीईटी कचरे को नियंत्रित रासायनिक प्रक्रियाओं के जरिए तोड़कर मध्यवर्ती यौगिक तैयार किए। फिर इन्हें एजो डाई में संश्लेषित किया। एजो डाई टेक्सटाइल इंडस्ट्री में सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली डाई है जो चमकीले रंग, स्थायित्व एवं व्यापक उपयोग के लिए जानी जाती है।

प्रो. सोनी के अनुसार ये पीईटी से मिली एजो डाई लंबे समय तक उपयोगी और मौजूदा डाइयों से ज्यादा प्रभावी है।

गांधी जी के विचार आज भी मार्गदर्शक

परिसर संवाददाता

मेरठ। महात्मा गांधी की पुण्यतिथि के अवसर पर चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग स्थित स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालय में एक संवाद परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में गांधी जी के जीवन, विचारों और शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण पर विस्तार से चर्चा की गई।

मुख्य अतिथि दिन ऑफ एजुकेशन प्रो. राकेश शर्मा ने कहा कि गांधी जी की शिक्षा के प्रति रुचि और उसके क्रियान्वयन के लिए किए गए प्रयास अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

पूर्व विभाग अध्यक्ष प्रो. विघ्नेश कुमार ने गांधी जी की मेरठ यात्रा से जुड़ी डॉक्युमेंट्री का उल्लेख करते हुए बताया कि यशोदा रियासत के चौधरी रघुवीर नारायण सिंह से महात्मा गांधी के संबंध अत्यंत आत्मीय थे।

इतिहास विभाग अध्यक्ष प्रो. कृष्णकांत शर्मा ने कहा कि गांधी बनना कठिन है, लेकिन देश के लिए किए गए उनके कार्यों के प्रति राष्ट्र सदैव कृतज्ञ रहेगा।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. मनीषा ने किया। विभाग के समस्त छात्र–छात्राएं एवं स्टाफ उपस्थित रहे।

हेरिटेज वाक...

इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. कृष्णकांत शर्मा की अगुवाई में बीए आनर्स के विद्यार्थियों ने 1857 की क्रांति स्थली औघड़नाथ मंदिर से हेरिटेज वाक का आरंभ किया। इसके बाद रेस कोर्स, परेड ग्राउंड और तत्कालीन यूरोपियन अधिकारियों के बंगलों, बिल्लेश्वर नाथ मंदिर, सेंट जॉंस चर्च से होकर सूरज कुंड पार्क का भी भ्रमण किया गया।

नेताजी से प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण से जुड़े युवा

परिसर संवाददाता

मेरठ। सीसीएसयू की साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर विशेष श्रद्धांजलि सभा की। विश्वविद्यालय परिसर में नेताजी की प्रतिमा पर कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने माल्यार्पण किया।

प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने कहा कि सुभाष चंद्र बोस का योगदान स्वतंत्रता संग्राम में अतुलनीय और अविस्मरणीय है। नेताजी का जीवन त्याग, अनुशासन, साहस और राष्ट्र के प्रति समर्पण का प्रतीक है। उन्होंने तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा जैसे नारों के माध्यम से स्वतंत्रता की ज्वाला प्रज्वलित की। आज के समय में विद्यार्थियों और युवाओं को नेताजी के आदर्शों से प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

कैनवास पर उतरा नेताजी का जीवन

कैंपस स्थित अटल सभागार में उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र प्रयागराज और ललित कला संस्थान कैंपस के संयुक्त तत्वावधान में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती पर चित्रकला एवं पोस्टर प्रतियोगिता हुई।

संरक्षक : प्रोफेसर संगीता शुक्ला (कुलपति), **मुख्य संपादक** : डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, **संपादक** : लव कुमार सिंह, **संपादकीय सलाहकार** : डॉ. दीपिका वर्मा, डॉ. बीनम यादव, **संपादकीय टीम** : बीएजेएमसी और एमएजेएमसी के छात्र–छात्राएं।

सहायक आचार्य की परीक्षा में सफलता : सीसीएसयू के हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग की शोधार्थी रेखा सोम ने हरियाणा लोक सेवा आयोग की सहायक आचार्य (हिंदी) की परीक्षा में सफलता प्राप्त की है। रेखा सोम, वर्तमान में प्रो. नवीन चंद्र लोहनी (कुलपति, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी) के निर्देशन में शोधरत हैं।

नासा वैज्ञानिक का पैतृक घर बना सीसीएसयू का वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक अनुसंधान केंद्र

परिसर संवाददाता

मेरठ। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के बुलावे पर नासा छोड़कर भारत आए चर्चित वैज्ञानिक डॉ. आरसी त्यागी का पैतृक आवास गुरुवार 12 फरवरी को वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक केंद्र बन गया। निधन से पहले डॉ. त्यागी ने मेरठ में बुढ़ाना गेट स्थित अपने आवास को सीसीएसयू के पुस्तकालय एवं अध्ययन केंद्र के रूप में विकसित करने की इच्छा जताई थी। अगस्त 2020 में निधन के बाद डॉ. त्यागी के परिजनों ने पैतृक आवास को उनकी इच्छा के अनुरूप विवि को सौंप दिया था। छह साल तक विभिन्न प्रक्रियाओं के बाद गुरुवार को आधिकारिक रूप से यह आवास चौ. चरण सिंह विवि मेरठ डॉ. आरसी त्यागी वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक अनुसंधान केंद्र' बन गया।

यह केंद्र डॉ. आरसी त्यागी को समर्पित रहेगा। नासा से लौटने के बाद डॉ. त्यागी डीआरडीओ से जुड़े थे। कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला, डॉ. आरसी त्यागी के पुत्र डॉ. दिनेश त्यागी, डॉ. राजेश त्यागी ने केंद्र का शुभारंभ हुआ। कुलपति ने कहा डॉ. आरसी त्यागी का जीवन समर्पण, शोध और राष्ट्र निर्माण की मिसाल है।

वैज्ञानिक और सांस्कृतिक केंद्र के शुभारंभ अवसर पर कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला, डॉ. आरसी त्यागी के परिजन और अन्य गणमान्य जन।

शोध निदेशक प्रो. वीरपाल सिंह ने कहा यह केंद्र शोधार्थी के लिए प्रेरणा स्रोत बनेगा।

रजिस्ट्रार डॉ. अनिल कुमार यादव, वित्त अधिकारी रमेश चंद्र, डीन साइंस प्रो. हरे कृष्णा, डीएसडब्ल्यू प्रो. भूपेंद्र सिंह, मुख्य अभियंता इं. मनीष मिश्रा, डॉ. अलका तिवारी, इं. मनोज कुमार, शिखा त्यागी, इं. विकास त्यागी, अभिमन्यु त्यागी, इं. प्रवीण पंवार, मितेंद्र कुमार सहित प्रो. त्यागी के परिवार के सभी सदस्य मौजूद रहे।

सुरों की निकाली विशिष्ट फ्रीक्वेंसी

प्रो. त्यागी ने निधन से कुछ वर्ष पहले संगीत के सात सुरों की विशिष्ट फ्रीक्वेंसी निकालकर उन्हें गणितीय आधार पर सिद्ध करते हुए स्वर मंडल की रचना की। 1995 में प्रो. आरसी त्यागी विवि के भौतिक विज्ञान विभाग से जुड़े थे। प्रो. त्यागी मुरादाबाद के रहने वाले थे। बुढ़ाना गेट पर अपनी बुआ के यहां रहकर पढ़ाई की। मेरठ से विज्ञान में स्नातक के बाद दिल्ली में नेशनल फिजिकल लैबोरेट्री से जुड़े। यहां से ब्रिटेन चले गए एवं पीएचडी की। आईआईटी दिल्ली के निमंत्रण पर वह भारत चले आए और सॉलिड स्टेट लैबोरेट्री के फिजिक्स डिविजन प्रभारी बने। शोध के खर्च उठाने में दिक्कत आने पर वह वापस अमेरिका में नासा से जुड़ गए। नासा में उन्होंने इंफ्रा रेड कंडक्टर्स और सेमी–कंडक्टर मेटेरियल बनाए। डॉ. त्यागी के दोनों बेटे डॉ. दिनेश और डॉ. राजेश अमेरिका में वैज्ञानिक हैं।

राष्ट्रीय मंच पर चमके सर छोटू राम संस्थान के विद्यार्थी

मेरठ। सर छोटू राम इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित सम्मेलन में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर संस्थान और विश्वविद्यालय का नाम गौरवान्वित किया है। नोएडा स्थित महर्षि विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में विद्यार्थियों की प्रतिभा, नवाचार और तकनीकी दक्षता को विशेष सराहना मिली। इस उपलब्धि के उपलक्ष्य में संस्थान के प्रशासनिक भवन स्थित समिति कक्ष में संयुक्त पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया।

समारोह में राष्ट्रीय सम्मेलन तथा पूर्व में आयोजित विचार प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के प्रभारी प्रो. एनके सोनी, निदेशक प्रो. नीरज सिंघल, विशेषज्ञ निर्णायकगण एवं शिक्षकों की उपस्थिति रही। अंशिका भारद्वाज एवं अभिषेक शर्मा ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया, जबकि वंशिका सिंघल, शिवांशी चौहान, त्रिलोक जोशी, पारस शाक्य एवं हर्षित वशिष्ठ ने रजत पदक हासिल किया। वक्ताओं ने कहा कि विद्यार्थियों की यह सफलता उनकी कड़ी मेहनत, शिक्षकों के मार्गदर्शन तथा संस्थान के सकारात्मक शैक्षणिक वातावरण का परिणाम है।

प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने लिया छात्रावासों का जायजा

परिसर संवाददाता

मेरठ। परिसर स्थित विभिन्न छात्रावासों में कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने औचक निरीक्षण किया। उन्होंने साफ–सफाई की व्यवस्था के साथ खाने की गुणवत्ता को स्वयं खाकर चेक किया। साथ ही सुधार के निर्देश दिए।

कुलपति के साथ मुख्य छात्रावास अधीक्षक प्रोफेसर दिनेश कुमार, कुलानुशासन अधीक्षक प्रोफेसर बीरपाल सिंह सहित विभिन्न छात्रावासों के वार्डन उपस्थित रहे। कुलपति सबसे पहले केपी–हॉस्टल पहुंची, जहां उन्होंने नाश्ता कर रहे छात्रों से संवाद किया और भोजन की गुणवत्ता स्वयं परखी।

उन्होंने छात्रों से साफ–सफाई, भोजन समेत अन्य मूलभूत सुविधाओं को लेकर बातचीत की और अधिकारियों को समस्याओं के समाधान के निर्देश दिए। इसके बाद कुलपति क्रमशः आर के हॉस्टल, डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम हॉस्टल और पंडित दीनदयाल उपाध्याय हॉस्टल पहुंची। उन्होंने कमरों, शौचालयों, स्टडी रूम, पेयजल व्यवस्था और सामान्य सुविधाओं का अवलोकन किया। कलाम हॉस्टल के किचन में कुलपति ने भोजन बनाने की पूरी प्रक्रिया देखी।

उन्होंने वार्डनों से कहा किसी भी छात्र को भोजन, इंफ्रास्ट्रक्चर या साफ–सफाई से जुड़ी समस्या न हो। कुलपति ने छात्रों से संवाद कर उन्हें पढ़ाई के साथ खेल गतिविधियों से जुड़ने का आह्वान किया। छात्रों को यह जानकारी दी कि विवि द्वारा एक सेंट्रलाइज्ड ई–मेल आईडी जारी की गई है, जिस पर वह अपनी समस्याएं सीधे दर्ज करा सकते हैं।

विभिन्न छात्रावासों का निरीक्षण करतीं कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला।

जेआरएफ–नेट से पोस्ट डॉक्टरल फैलोशिप तक खूब चमके मेधावी

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विवि के मेधावियों ने पोस्ट डॉक्टरल फैलोशिप से लेकर यूजीसी की नेट–जेआरएफ की परीक्षा में अपनी प्रतिभा साबित फिर साबित कर दी। कैंपस के आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग से पीएचडी उत्तीर्ण डॉ. विकास कुमार सिंह का चयन मर्डोक विवि ऑस्ट्रेलिया में पोस्ट–डॉक्टरल फैलोशिप के लिए हुआ है। डॉ. विकास ने अपनी पीएचडी प्रो. शैलेंद्र शर्मा के निर्देशन में की।

डॉ. विकास ने अपने शोध गेहूं की आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर काम किया। मर्डोक विवि और सीसीएसयू के बीच एमओयू भी है। मर्डोक विवि में डॉ. विकास कुमार सिंह, विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. राजीव कुमार वार्ष्णेय कार्य करेंगे। उनके शोध का मुख्य उद्देश्य गेहूं की गुणवत्ता में सुधार करना होगा। इसमें पोषण गुणवत्ता, उत्पादकता वृद्धि एवं बदलती जलवायु परिस्थितियों के अनुरूप उन्नत गेहूं किस्मों का विकास किया जाएगा।

कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने डॉ. विकास कुमार सिंह को उक्त उपलब्धि पर शुभकामनाएं दीं।

कैंपस स्थित शिक्षा विभाग से दीपांजलि ने जेआरएफ, जबकि शिवम शर्मा, नदिता, नीतू सिंह, अंजलि एवं पायल ने नेट में सफलता पाई है। शालू, मधुलिका, मोक्षा डागर, स्नेहा एवं

प्रोफेसर संगीता शुक्ला के साथ डॉ. विकास कुमार।

स्वर्णिका शर्मा पीएचडी के लिए उत्तीर्ण हुई हैं। इतिहास विभाग से यश बंसल एवं सृष्टि कनौजिया ने जेआरएफ में सफलता पाई है। धीर सिंह, ललित, सृष्टि कनौजिया विजयपाल ने नेट जबकि कोमल, अर्चिता शर्मा, तान्या, अंतिम मलिक, सन्नी कुमार पीएचडी प्रवेश परीक्षा में सफल हुए हैं। आकांक्षा सिंह ने लॉ विषय में यूजीसी नेट एवं पीएचडी में सफलता हासिल की है। उर्दू विभाग से सैयदा मरियम इलाही, फरहत अख्तर और नुजहत अख्तर ने उर्दू विषय में सफलता पाई है।

विपत्ति के समय मोबाइल फोन बज उठेगा

परिसर संवाददाता

मेरठ। कोई आपका पीछा कर रहा हो, आप उससे डर कर मदद मांगना चाहती हों पर शोर मचाने से भी डर लगा रहा हो और उसी वक्त कोई फोन आ जाए, तो आपको राहत मिल जाएगी। पीछा करने वाला भी एक बार को अपने कदम पीछे कर लेगा कि कहीं पकड़ा न जाए, ऐसी सुविधा प्रदान करने की टेक्नोलाजी सर छोटूराम इंस्टीट्यूट आफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलाजी के छात्रों ने विकसित की है। शीशील्ड नामक इस प्रोजेक्ट के तहत विकसित पोर्टल में ऐसी

अब सुरक्षा कवच बनेगा 'शीशील्ड'

व्यवस्था है कि विपत्ति के समय मोबाइल फोन बज उठेगा, जिस पर बात करते हुए महिलाएं सुरक्षित पहुंच सकती हैं।

इसे विकसित करने वाले विद्यार्थियों के टीम लीडर उत्कर्ष गौर बीटेक आइटी प्रथम वर्ष के छात्र हैं। उत्कर्ष के अनुसार असहज परिस्थितियों में मोबाइल पर काल करने के साथ ही यह पोर्टल महिलाओं को आसपास के सुरक्षित स्थानों की जानकारी भी देगा। इसमें लोकेशन साझा करने, कैब का विवरण जांचने और सतर्क रहने की सुविधा दी गई है। वहीं महिलाओं को रोशनी वाले रास्तों से गुजरने, फोन चार्ज रखने और परिचित को अपने पहुंचने का समय व रास्ते की जानकारी पहले से देने का सुझाव दिया गया है। पोर्टल पर महिलाएं मेडिकल विवरण भी डाल सकती हैं जिससे उन्हें मेडिकल इमरजेंसी के समय भी मदद मिल सकेगी। इसके साथ ही महिला हेल्पलाइन नंबरों को भी शामिल किया गया है।

दीनदयाल उपाध्याय पर विशेष व्याख्यान : राजनीति विज्ञान विभाग में पं. दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि पर विशिष्ट व्याख्यान आयोजित हुआ। अध्यक्षता प्रो. संजीव कुमार शर्मा जी ने की, मुख्य वक्ता प्रो. मधुरेन्द्र कुमार रहे।

राष्ट्र की सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाएं युवा

परिसर संवाददाता

मेरठ। देश के 77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में आयोजित समारोह में कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला सहित शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, विद्यार्थी एवं एनसीसी कैडेट्स सहभागी बने और राष्ट्रीय एकता व संविधान मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

इस दौरान कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने युवाओं का आह्वान किया कि वे राष्ट्र सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाएं।

गणतंत्र दिवस समारोह में भाग लेती कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला और विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी व कर्मचारीगण।

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में संस्कृति और विज्ञान पर मंथन करेंगे वियतनाम के विद्यार्थी

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय और वियतनाम के विश्वविद्यालयों के बीच हुए करारों के तहत सहयोग बढ़ाने का समय आ गया है। विश्वविद्यालय ने वियतनाम के विद्यार्थियों और शिक्षकों के दल को विशेष सत्र के लिए आमंत्रित किया है। दोनों देशों के विद्यार्थियों के बीच सांस्कृतिक सहयोग और विज्ञान विषयों पर विचार–विमर्श किया जाएगा। इस संदर्भ में लाइफ साइंसेज विषय पर अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक कंसोर्टियम का आयोजन एक और दो मार्च को किया जाएगा।

कार्यक्रम का उद्देश्य दोनों देशों के विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों के बीच शैक्षणिक और शोध सहयोग को सशक्त बनाना है। सीसीएसयू द्वारा भेजे गए आमंत्रण को वियतनामी विश्वविद्यालयों ने स्वीकार कर लिया है। यह दल भारत सरकार के आमंत्रण पर दिल्ली में एक कार्यक्रम में भाग लेगा। सीसीएसयू में एक मार्च को दल का आगमन होगा। वे दो मार्च को कार्यक्रम में शामिल होंगे।

18 विद्यार्थियों और शिक्षकों का दल एक व दो मार्च को परिसर में रहेगा

इस कार्यक्रम के माध्यम से उच्च शिक्षा और लाइफ साइंसेज के क्षेत्र में संयुक्त शोध, अकादमिक सहभागिता और दीर्घकालिक सहयोग को बढ़ावा दिया जाएगा। इस 18 सदस्यीय दल में स्नातक और परास्नातक स्तर के छात्र, शोधार्थ और शिक्षक शामिल हैं।

सीसीएसयू प्रशासन के अनुसार, इस प्रकार के अंतरराष्ट्रीय अकादमिक आयोजनों से विश्वविद्यालय की वैश्विक शैक्षणिक पहचान मजबूत होती है। साथ ही छात्रों तथा शोधकर्ताओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शोध सहयोग के नए अवसर प्राप्त होते हैं। विश्वविद्यालय ने आशा व्यक्त की है कि यह कंसोर्टियम भारत–वियतनाम के बीच स्थायी शैक्षणिक साझेदारी की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

शैक्षिक भ्रमण...

सीसीएसयू के प्लांट प्रोटेक्शन विभाग के विद्यार्थियों ने फरवरी माह में नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल मार्केटिंग का शैक्षिक भ्रमण किया। इस दौरान छात्रों ने जर्मप्लाज्म कंजर्वेशन और एग्री–मार्केटिंग सिस्टम के बारे में प्रैक्टिकल जानकारी प्राप्त की।

बैक्टीरिया को खत्म करने का विज्ञान चुटकीभर राख में छुपा

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग ने साबित कर दिया कि पारंपरिक राख, जिसे भस्म या भभूत भी कहा जाता है, केवल संस्कृति और आस्था का हिस्सा नहीं बल्कि अत्यंत प्रभावशाली जीवाणुरोधी पदार्थ भी है। प्रो. संजीव शर्मा के नेतृत्व में शोधार्थी अभिषेक शर्मा ने लैब में गन्ने की खोई, चीड़ की लकड़ी और अखरोट के छिलके से तैयार राख पर प्रयोग किया। अध्ययन में पाया गया कि राख में मौजूद पोटेशियम और सिलिकेट जैसे तत्व स्टैफिलोकोकस आरियस और ई–कोलाई जैसे हानिकारक बैक्टीरिया को छह घंटे में पूरी तरह नष्ट कर देते हैं।

शोध के परिणाम दक्षिण कोरिया के जर्नल एडवांसेज इन नैनो साइंस और भारतीय जर्नल नैनो मैटेरियल्स में प्रकाशित हो चुके हैं और राख पर 2023 में कोरियन और 2024 में भारतीय पेटेंट भी मिल चुका है।

प्रो. शर्मा का कहना है कि राख हमारी संस्कृति, आस्था और व्यवहार का हिस्सा रही है। इसे पारंपरिक तरीके से उपयोग करने से न केवल हाथ और बर्तन साफ रहते थे, बल्कि बैक्टीरिया और वायरस भी नहीं पनप पाते थे। प्राकृतिक और रसायन–मुक्त यह तरीका आज के समय में भी अत्यंत उपयोगी है। उन्होंने आगे बताया कि साधु और नागा सन्यासी अपने शरीर पर भस्म लगाते हैं, जिसे भभूत भी कहा जाता है। यह उन्हें ठंड और गर्मी से बचाने के साथ–साथ मानसिक और आत्मिक शुद्धि प्रदान करता है। शोध में पाया गया कि राख में लगभग 60 प्रतिशत सिलिका, 15 प्रतिशत कैल्शियम ऑक्साइड और 10 प्रतिशत पोटैशियम होता है। नैनोमैटेरियल के रूप में इसका प्रयोग बैक्टीरिया को रोकने में बेहद कारगर साबित होता है।

प्रो. शर्मा के अनुसार एक चुटकी भर राख में इतनी ताकत होती है कि यह जलजनित बीमारियों और संक्रमणों को रोकने में मदद कर सकती है। इस अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि सदियों पुरानी परंपरा के पीछे वैज्ञानिक कारण भी हैं, और राख न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से बल्कि स्वास्थ्य और स्वच्छता के लिहाज से भी अनमोल है।